प्रमुख पात्र परिचय

कुन्ती :

शूर नामक यादव की पुत्री पृथा जिसको कुन्तिभोज ने गोद लिया । वह कर्ण की माता थी, दुर्वासा ऋषि द्वारा दिए गए मंत्र, जिसकी शक्ति से वह देवताओं को बुला सकती थी, का प्रयोग कौमार्यावस्था में करने के कारण उसे सूर्य से एक पुत्र प्राप्त हुआ, जो उसने भय व लोकलज्जा से नगर के पास ही बहने वाली अश्ववेगा नदी में एक पेटी में बन्द करके प्रवाहित कर दिया । इनका विवाह पाण्डु से हुआ किंतु कर्दम ऋषि के शाप के कारणपाण्डु स्त्री संसर्ग के करते ही मृत हो जाते । अतः वे पाण्डु सन्तानोत्पत्ति के लिए समर्थ न थे, अतः उनकी सहमति से कुन्ती ने दुर्वासा प्रदत्त मन्त्र का प्रयोग कर क्रमशः धर्म, वायु और इन्द्र का आह्वान कर उनके युधिष्ठिर, भीम तथा अर्जुन को प्राप्त किया ।

कुबेर :

ये इडविडा में उत्पन्न विश्रवा ऋषि के पुत्र हैं अतः रावण के आधे भाई हैं । धन के स्वामी हैं और उत्तर दिशा के अधिपति हैं । इनका शरीर विकृत था । ये यक्ष तथा किन्नरों के राजा और रुद्र के मित्र हैं । राजधानी अलकापुरी थी, जो हिमालय में स्थित बतायी जाती है ।

कृप :

अश्वत्थामा का मामा । कृप और कृपी दोनों भाई-बहन शरद्वत ऋषि की संतान थे । इनकी माता जानपदी नाम की अप्सरा थी । कृप का पालन पोषण शन्तनु ने किया था । कृप धनुर्विद्या में बड़ा निपुण था । महाभारत युद्ध में वह कौरव पक्ष की ओर लड़ा और अन्त तक मारा नहीं गया । यह सात चिरंजीवियों में से एक है । इसकी बहन कृपी का विवाह द्रोणाचार्य से हुआ ।

दुर्वासा :

महर्षि अत्रि तथा अनसूया के पुत्र दुर्वासा एक बड़े क्रोधी ऋषि के रूप में वर्णित हैं। इन्हें प्रसन्न करना कठिन था। अधिकतर तपस्यालीन रहते थे किंतु किसी की छोटी सी त्रुटि भी उन्हें असह्य थी। शकुन्तला को [इन्होने ही शाप दिया था। कुन्ती को देवता आह्वान का मन्त्र इन्होंने ही दिया था।

दुष्यंत :

चन्द्रवंश में उत्पन्न प्रसिद्ध राजा, पुरु की सन्तान। वन में आखेट हेतु जाने पर कण्व ऋषि के आश्रम में उनकी पालिता पुत्री (जो विश्वामित्र तथा मेनका के संयोग से उत्पन्न हुई थी) शकुन्तला से प्रेम कर गान्धर्व विवाह कर लिया ऋषि कण्व उस समय आश्रम से बाहर गए थे। शकुन्तला गर्भवती हो गयी तो कण्व ने उसे दुष्यन्त के पास राजधानी भेजा किंतु उसने उसे अस्वीकार कर दिया। (कालिदास के अनुसार अस्वीकार दुर्वासा के शापजनित विस्मृति थी) शकुन्तला रोती हुई महल के बाहर आयी जहाँ से अप्सरा ने उसे महर्षि मारीचि के आश्रम में पहुँचा दिया, वहाँ उसके सर्वदमन नामक प्रतापी पुत्र उत्पन्न हुआ। वही आगे चलकर भरत बना।

नहुष :

एक चन्द्रवंशी राजा, ययाति का पिता, पुरुरवा का पोता और आयुस् का पुत्र। यह बहुत बुद्धिमान और बलवान राजा था। जब इन्द्र ने वृत्र को मार दिया और इस ब्रह्महत्या का प्रायश्चित करने के लिए वह एक सरोवर में जा छिपा, तो उस समय नहुष को देवताओं ने स्वर्ग में व्यवस्था रखने के लिए इन्द्रासन पर बैठाया। वे इन्द्राणी पर मोहित हो गए और प्रेम प्रस्ताव भेजा। शची बहुत चिन्तित हुई और उन्होंने ऋषियों से परामर्श लिया। तदनुसार राजा नहुष को शची ने सम्वाद भेजा कि आप सप्तर्षियों द्वारा ढोयी जाती हुई पालकी पर बैठकर मेरे महल में पधारें। नहुष ने ऐसा ही किया और अत्यंत उत्सुकता के कारण बार-बार सर्प-सर्प (चलो तेज चलो) कहा। जिस पर क्रुद्ध हो अगस्त्य मुनि ने नहुष को साँप बन जाने का शाप दे दिया और वह पृथ्वी पर जा गिरा। अपनी इस दुरवस्था में वह तब तक पड़ा रहा, जब तक कि युधिष्ठिर ने उसका उद्धार न कर दिया।

कुन्तिभोज :

एक यादव राजकुमार। कुन्ति देश का राजा, जिसने निःसंतान होने के कारण कुन्ती को गोद ले लिया था।

ययाति :

नहुष के पुत्र प्रतापी राजा। इनको शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी ने वरण किया। किसी बात पर शर्मिष्ठा जो असुरराज वृषपर्वा की पुत्री थी, ने देवयानी का अपमान कर दिया था। शुक्राचार्य जो वृषपर्वा के गुरु थे, इस बात पर राज्य छोड़ कर जाने लगे, तो वृषपर्वा ने किसी भी शर्त पर उन्हें जाने से रोकने का प्रयास किया। देवयानी ने कहा शर्मिष्ठा को मेरी दासी बनना पड़ेगा और तदनुसार शर्मिष्ठा दासी बनीं किन्तु ययाति उससे प्रेम करने लगे। देवयानी रूठकर पिता के पास चली गयी। ययाति अत्यन्त भोग विलास में डूब गए। शुक्राचार्य ने उन्हें असमय में ही वार्धक्य की अशक्तता का शाप दे दिया। राजा ययाति बहुत दुखी हुए। शाप निवारण का एक ही उपाय था कि वे अपना बुढ़ापा देकर किसी का यौवन ले सकते थे। ययाति को भोग लिप्सा थी। अतः सबने मना कर दिया केवल पुरु को छोड़कर उसके सभी पुत्रों ने उसके प्रस्ताव को ठुकरा दिया। पुरु ने बुढ़ापा स्वीकारा और उसे बुढ़ापा देकर ययाति हजार वर्ष तक भोगों में रमे रहे अन्त में उन्हें ज्ञान हुआ कि भोग रूपी अग्नि से तो काम की ज्वाला बढ़ती ही जाती है घटती नहीं। और यह लिप्सा मन को अशान्त रखती है। ज्ञान आने पर इन्होंने पुरु की युवावस्था उसे लोटा दी और सन्यास ले लिया।

हस्ति :

प्रसिद्ध चन्द्रवंशी राजा, जो कौरव पाण्डवों के पूर्ववर्ती थे। उन्होंने ही हस्तिनापुर की नगरी बसायी थी। तब से यही इस वंश के राजाओं की राजधानी रही। हस्तिनापुर को इसीलिए गजपुर या गजाह्वय भी कहते हैं।

भीष्म :

शान्तनु का गङ्गा से उत्पन्न पुत्र (शान्तनु से गंगा के आठ पुत्र हुए, आठवाँ पुत्र यही था)। पहले सात पुत्रों को गङ्गा ने जलप्रवाहित कर दिया था। ये आठ वसु (देवयोनि विशेष) थे, जिन्हें शाप के कारण पृथ्वी पर जन्म लेना पड़ा। आठवें वसु भीष्म थे, जिन्हें शान्तनु ने जलप्रवाहित नहीं होने दिया। इस पर गङ्गा शान्तनु को छोड़कर चलीं गयीं और पुत्र को अपने साथ ले गयीं। वहाँ बड़ा होने पर इसे गुरु बृहस्पति से ज्ञान और परशुराम से शास्त्रज्ञान की शिक्षा दिलायी और किशोर होने पर राजा के पास छोड़ दिया। तब इसका नाम देवव्रत था।

पिता शान्तनु एक मछुवे की सत्यवती नामक तरुणी पर आसक्त हो गए

उसके पास विवाह प्रस्ताव भेजा गया। स्वयं देवव्रत इस कार्य के लिए गए। किंतु मछुवे ने शर्त रखी कि इस पुत्री से उत्पन्न पुत्र ही राजा बने। देवव्रत ने वचन दे दिया किन्तु अगली शंका मछूवे ने रखी। तुम्हारे पुत्र तो इस शर्त को नहीं मानेंगे, तब देवव्रत ने भीषण प्रतिज्ञा की कि वे आजन्म ब्रह्मचारी रहेंगे। तब से उनका नाम भीष्म हो गया।

सत्यवती से शान्तनु के चित्राङ्गद और विचित्रवीर्य दो पुत्र हुए। चित्राङ्गद उद्धत था। एक गंधर्व से युद्ध करता हुआ मारा गया। तब विचित्रवीर्य को गद्दी पर बिठाया गया जो विषयी और निर्बल था। उसके लिए भीष्म ने काशिराज की पुत्रियों अम्बा, अम्बिका और अम्बालिका का अपहरण किया। इनमें से अम्बिका और अम्बालिका का विवाह विचित्रवीर्य से कर दिया गया किन्तु अम्बा शाल्वनरेश को प्रेम करती थी, जिससे उसे उसके पास भेज दिया गया, जिसने उसे ठुकरा दिया। वह वापस आयी और भीष्म से कहा कि वे उसे अपना लें किन्तु भीष्म प्रतिज्ञाबद्ध थे। उसे निराश लौटना पड़ा। उसने परशुराम जो भीष्म के गुरु रहे थे अपनी व्यथा कही परशुराम ने भीष्म को विवाह करने की आज्ञा दी। वे नहीं मानें तो दोनों में युद्ध हुआ, जो अनिर्णीत रहा। अम्बा ने निराश और कुपित हो प्रतिज्ञा की कि मेरा जीवन बिगाड़ने वाले भीष्म तुम्हारी मृत्यु का कारण मैं बनूंगी। तपस्या करती हुई वह मर गयी और दूसरा जन्म द्रुपदराज के यहाँ शिखण्डी के रूप में लिया, उसे सामने रखकर अर्जुन ने कुरुक्षेत्र में भीष्म पर बाण वर्षा की। चूंकि वे शिखण्डी को स्त्री ही मानते थे अतः उन्होंने अपने शस्त्र छोड़ दिए और शरविद्ध होकर शरशय्या पर गिर गए।

चूंकि पिता शान्तनु ने प्रसन्न होकर इन्हें इच्छामृत्यु का वर दिया था अतः वे तब तक शरशय्या पर पड़े रहे जब तक सूर्य उत्तरायण न हो गया, तब उन्होंने प्राण त्यागे।

शिखण्डी :[1]

अम्बा ही दूसरे जन्म में द्रुपदराज के यहाँ शिखण्डी के रूप में उत्पन्न हुई। वह मूलतः स्त्री थी किन्तु उसका पालन पोषण पुरुष के रूप में किया गया। समय पाकर उसका विवाह हिरण्यवर्मा की पुत्री से हुआ। हिरण्यवर्मा को जब पता चला कि उसका जमाता वास्तव में स्त्री है, तो उसने द्रुपदराज पर चढ़ाई करने का विचार किया किन्तु शिखण्डी वन में जाकर घोर तपस्या करने लगा और एक गंधर्व/यक्ष से उसे पुरुषत्व प्राप्त करने की विद्या ज्ञात हो गयी। वह पुरुष बनकर लौटी। महाभारत के युद्ध में उसे पितामह भीष्म को मारने के लिए ढाल की भाँति प्रयोग किया गया। पितामह स्त्री के साथ युद्ध नहीं कर सकते

युद्ध विमुख हो गए और हताहत हो गए थे । बाद में अश्वत्थामा ने शिखण्डी को मार डाला ।

शिवि :

एक महान दानी व परोपकारी राजा । इनकी परीक्षा के लिए इन्द्र ने बाज और अग्नि ने कबूतरी का रूप धारण किया और कबूतरी राजा की गोद में भयाकुल हो जा गिरी । राजा ने कबूतरी की रक्षा के लिए तोल में उसके बराबर अपना माँस इन्द्र को प्रस्तुत किया ।

कपिल :

एक बड़े तपस्वी और ज्ञानी मुनि । राजा सगर ने अश्वमेघ किया और यज्ञीय अश्व छोड़ा । इन्द्र ने उसे चुरा लिया सगर के साठ हजार पुत्र अश्व ढूंढ़ते हुए कपिल की गुफा के समीप पहुँचे और चोरी का आरोप उन पर लगाया । इससे क्रुद्ध होकर उन्होंने सगर के सभी पुत्रों को भस्म कर दिया ।

कालयवन :

यवन राजा, जो यादवों का शत्रु था और बड़ा शक्तिशाली था । युद्ध में उसे मारना असम्भव जानकर कृष्ण कपट से उसे उस गुफा में ले गए जहाँ मुचुकुन्द सो रहे थे और अपना पीताम्बर उन्हें उढ़ा दिया । कालयवन ने उन्हे कृष्ण समझकर लात मारी तो वह जग गए और उनकी दृष्टि पड़ते ही कालयवन भस्म हो गया ।

मुचुकुन्द :

प्रसिद्ध चक्रवर्ती राजा मान्धाता के पुत्र । इन्होंने देवासुर संग्राम में देवों की सहायता की और प्रसन्न होकर देवताओं ने इनको विश्राम करने की सलाह दी ओर वर दिया कि जो उनके विश्राम में बाधा डालेगा, उनकी दृष्टि पड़ते ही भस्म हो जाएगा । कृष्ण द्वारा इनकी विश्रामस्थली गुफा में कालयवन को छल से ले जाया गया जहाँ उसने मुचुकुन्द की निद्रा में बाधा डाली और भस्म हो गया ।

कार्तिकेय :

शिवजी हजारों वर्ष की तपस्या के बाद जागे तो पार्वती से रमण किया । उनका तेज सहन न कर पार्वती ने उसे गंगा में फेंक दिया । जिसके द्वारा यह तेज छः कृत्तिकाओं के गर्भ में चला गया जो नहा रहीं थीं । उन्होंने अलग-अलग

बालकों को जन्म दिया किन्तु चमत्कारी ढंग से उसे जोड़ दिया और छः मुखों वाला बालक बन गया। यही षडानन हैं। ये कुछ बड़े होने पर पार्वती को प्राप्त हुए। प्रतापी इतने थे कि देवताओं को पराजित करने वाले तारकासुर को मारने के लिए ये देवों की सेना के सेनानी बने और तारकासुर को मार डाला।

कार्तिकेय ने क्रौञ्च पर्वत को अपने बाणों से छेद डाला था। इनका वाहन मोर है और ये ब्रह्मचारी रहे। शक्ति इनका शस्त्र है।

पंचजन (विष्णु पुराण)

एक राक्षस, जिसने कृष्ण के गुरु सान्दीपनि के पुत्र का अपहरण कर लिया था और उसे ले जल में प्रविष्ट हो गया था। गुरुदक्षिणा में गुरुपत्नि ने अपना बिछुड़ा पुत्र चाहा, जो कृष्ण के द्वारा पंचजन को मारकर वापस लाया गया

शम्बर :

एक राक्षस, जो रुक्मिणी के पुत्र प्रद्युम्न को जब वह बालक ही था, उठा ले गया और समुद्र में फेंक दिया। बालक को महामत्स्य निगल गया जो मछुवे द्वारा पकड़ लेने पर चीरा गया तो बालक मिला। उसे शम्बर ने अपने घर रख लिया। शम्बर की पत्नि मायावती रति का अवतार थी, उसने बालक को पाला किन्तु युवा होने पर वह उस पर आसक्त हो गयी, जिस पर प्रद्युम्न ने उसे फटकारा, किन्तु नारद ने आकर वृत्तान्त सुनाया कि तुम महादेव के द्वारा भस्म कामदेव हो और मायावती रति है तो दोनों मिल गए और प्रद्युम्न ने शम्बर को युद्ध के लिए ललकारा और मार गिराया। फिर वह मायावती के साथ द्वारिका लौटा और माता-पिता से मिला।

गौतम :

एक प्रसिद्ध ऋषि और तत्वज्ञ। वे महान तर्क शास्त्री थे। भारत के वैदिक दर्शन छः हैं, न्याय, वैशेषिक, साँख्य, योग, मीमाँसा तथा अद्वैत वेदांत। इनमें से न्याय दर्शन के प्रणेता गौतम ही हैं। आपने न्यायसूत्र की रचना की।

कणाद :

एक अत्यन्त ज्ञानी महर्षि और वैशैषिक दर्शन के प्रणेता। इसमें गौतम के न्याय दर्शन, जिसमें सोलह तत्व बताए गए हैं, के स्थान पर केवल सात तत्व बनाए गए हैं! विशेष नामक पदार्थ पर बल दिया गया है और सारे पदार्थ अणुओं के विभिन्न संयोजनों से बने हैं इस वैज्ञानिक सिद्धांत को बताया गया है।

कपिल :

एक सिद्ध पुरुष और परमज्ञानी ऋषि । गीता में कृष्ण कहते है—'सिद्धानां कपिलो मुनिः' ये साँख्य दर्शन के प्रणेता हैं । इसमें 25 तत्वों का विवेचन है। मुख्य उद्देश्य अन्य चौबीस तत्वों की पच्चीसवें तत्व पुरुष (आत्मा) से भिन्नता दिखाना और प्राणियों को सांसारिक बंधनों से मुक्त करना । साँख्य संसार को मुख्यतः मूल प्रकृति की विकृति मानता है । पुरुष निर्लिप्त और निष्क्रिय दर्शक है ।

साँख्य वेदान्त से भिन्न है क्योंकि यह द्वैत वादी दर्शन है और ब्रह्म को विश्व का स्त्रोत व नियन्त्रणकर्ता नहीं मानता ।

परशुराम :

विष्णु के छठे अवतार जमदग्नि ऋषि तथा रेणुका के पुत्र ये ब्राह्मण होते हुए भी महान योद्धा थे । इनका प्रिय शस्त्र कुठार या फरसा था । आज्ञा पालक इतने कि पिता ने क्रुद्ध होकर आज्ञा दी कि माता रेणुका का शिरच्छेदन कर दो तो उन्होंने कर दिया । पिता प्रसन्न हुए तो वर माँगा कि माता जीवित हो जाएँ ।

एक बार हैहयराज माहिष्मतीपति कार्तवीर्य जिसे सहस्रार्जुन भी कहते थे, जिसके हजार भुजाएँ होने से सहस्रबाहु भी जाता था, जमदग्नि के आश्रम में आया और उनकी गाय लेने की इच्छा प्रकट की । मना करने पर वह बलपूर्वक गाय ले गया । परशुराम को जब यह ज्ञात हुआ तो उन्होंने युद्ध करके कार्तवीर्य को यमलोक पहुँचा दिया। उसके पुत्रों ने एक बार अकेला पाकर जमदग्नि की आश्रम में हत्या कर दी । परशुराम तब कहीं गए थे, जब उन्हें यह दुखद समाचार मिला तो उन्होंने प्रतिज्ञा ली कि मैं पृथ्वी से क्षत्रियों को समूल नष्ट कर दूँगा और उन्होंने इक्कीस बार पृथ्वी को क्षत्रियविहीन किया ।

बाद में राम ने अवतार लिया तो परशुरामउ नसे पराजित हो गए और तपस्या करने चले गए । ये महेन्द्र पर्वत पर तपस्यालीन हैं, ये सात चिरंजीवियों में आते हैं । कार्तिकेय के बल से ईर्ष्या होने पर इन्होंने भी क्रौञ्च पर्वत को बाणों से छेद डाला ।

ये भीष्म के शस्त्राचार्य रहे हैं । बाद में भीष्म से अम्बा से विवाह के प्रश्न को लेकर इनका युद्ध हुआ जो अनिर्णीत रहा । परशुराम का शिवजी के दर्शनार्थ जाने पर गणेश जी के द्वारा रोके जाने पर उनसे युद्ध हुआ और इस युद्ध में गणेश जी का एक दाँत टूट गया तभी से वे एकदन्त कहलाते हैं ।

कर्ण भी इन्हीं से धनुर्वेद का ज्ञान प्राप्त करने और ब्रह्मास्त्र का रहस्य जानने गया था ।

इन्द्र :

देवताओं के राजा, अत्यन्त प्रतापी देव। स्वर्ग पर राज्य करते हैं। बृहस्पति इनके गुरु है। पुलोम की पुत्री शची इनकी पत्नी है। अपने पद को लेकर चिंतित रहते हैं। कहते हैं कि सौ यज्ञ करने वाले को स्वर्ग प्राप्त होता है अतः ये प्रायः उसमें बाधा डालते हैं। विश्वामित्र कीं तपस्या भंग करने हेतु मेनका अप्सरा इन्होंने भेजी। गौतम की पत्नी अहल्या पर मोहित हो गए और छल से उसका सतीत्व भ्रष्ट कर दिया, जिस पर ऋषि के शाप से इनके पूरे शरीर पर स्त्री के भग के चिह्न बन गए, जो बाद में आँखों के रूप में बदल गए अतः यह सहस्राक्ष कहलाते हैं।

युद्ध में बल जैसे राक्षसों का वध किया और नमुचि राक्षस को मार डाला। वज्र इनका अस्त्र है जो दधीचि ऋषि की हड्डियों से बना है। कहते हैं कि पहले पर्वतों के पंख होते थे और वे इधर-उधर उड़ते थे तो भूमि पर अस्थिरता फैलती थी, इन्द्र ने उनके पंख वज्र से काट डाले। अतः उन्हें गोत्रभिद या पर्वतारि भी कहते हैं।

वृत्रासुर को मारने पर ब्रह्महत्या का पातक लगने पर इन्द्र को प्रायश्चित के लिए स्वर्ग छोड़ना पड़ा, तब स्वर्ग के राज्य पर प्रतापी नहुष को बैठाया गया। इनके पुत्र का नाम जयंत हैं। अर्जुन भी इन्हीं की कृपा से कुन्ती को प्राप्त हुए अतः इन्हीं का पुत्र माना जाता है। महाबली बानरराज पम्पापुरनरेश बालि भी इन्द्र का पुत्र था।

महेन्द्र :

एक पर्वत जो उड़ीसा प्रान्त में स्थित है। भगवान परशुराम ने इसी पर्वत पर तपस्या की थी। यहाँ आकर कर्ण ने आश्रम में रहकर गुरु परशुराम से धनुर्वेद तथा ब्रह्मास्त्र सीखा।

बाण, बाणासुर :

असुरराज जिसकी राजधानी शोणितपुर थी जो अग्नि से आवृत्त रहती थी। बाणासुर बहुत बली था। यह महान दानी बलि का पुत्र था। इसकी बेटी उषा बहुत सुन्दर थी। स्वप्न में उसने कृष्ण के पौत्र अनिरुद्ध को देखा और चित्रलेखा की सहायता से अनिरुद्ध को अपनी पुरी में बुलवा लिया। बाद में कृष्ण बलराम व यादव सेना ने आक्रमण कर बाण को परास्त किया और अनिरुद्ध व उषा को विवाह कर उसे द्वारका ले आये।

नरकासुर :

एक राक्षस का नाम। प्राग्ज्योतिष का राजा। एक वृत्तान्त के अनुसार उसने हाथी का रूप धारण किया और विश्वकर्मा की पुत्री को उठाकर ले गया और उससे बलात्कार किया। उसने गन्धर्वों, देवों और मनुष्यों की लड़कियों तथा अप्सराओं को उठाया और इस प्रकार उसके अन्तःपुर में सोलह हजार से अधिक युवतियाँ थीं। श्रीकृष्ण ने नरकासुर को मार डाला तब यह युवतियाँ द्वारका लायीं गयीं। यह राक्षस भूमि से उत्पन्न होने के कारण भूमिज/भौम भी कहलाता है।

मंगल ग्रह, भी पृथ्वी से उत्पन्न पुराणों में वर्णित है, अतः वह भी भौम कहलाता है '

कार्तवीर्य/सहस्रबाहु/सहस्रार्जुन :

कृतवीर्य का पुत्र। यह हैहयवंशी क्षत्रिय था। बड़ा प्रतापी राजा था। इसकी राजधानी महिष्मती (नर्मदा तट पर स्थित आधुनिक महेश्वर म०प्र० के धार जिले में) थी। यह इतना बलवान था कि उसने रावण तक को बन्दी बना कर रखा था। उसके एक हजार भुजाएँ होना पुराणों में वर्णित है। सम्भवतः ये उसके सैन्यबाहु थे। परशुराम के पिता जमदग्नि के आश्रम से एक बार वह गया और वहाँ उनकी कामधेनु उसे भा गयी, उसने उसे लेना चाहा तो जमदग्नि ने इन्कार कर दिया इस पर वह बलपूर्वक गाय ले गया। इस वृतान्त को सुन कर परशुराम को बड़ा क्रोध आया और उन्होंने कार्तवीर्य को सेना समेत मार डाला।

वायु पुराण के अनुसार उसने तपस्या करके दत्तात्रेय से कई वर प्राप्त किए जैसे हजार भुजाएँ, स्वर्णमय अप्रतिहत गतिरथ, दिग्विजय और अपराजेयता। उसने 85000 वर्ष शासन किया और 10,000 यज्ञ किए।

दुन्दुभि :

एक बड़ा बलवान राक्षस, जिसने वानर राज बालि के नगर पम्पापुर में आकर बल से उन्मत्त हो चुनौती दी तो बालि ने उससे द्वन्द्व युद्ध करके उसे मार डाला। वह एक विशाल भैंसे का रूप धर कर आया था। उसका विशाल अस्थिपंजर सुग्रीव ने राम का दिखाया था, जिसे उन्होंने हलकी ठोकर मारी और वह मीलों दूर जा गिरा।

इन्द्रसूनु/बालि :

प्रसिद्ध वानरराज जो किष्किन्धा प्रदेश में पम्पापुर को राजधानी बनाकर राज्य करता था। यह इन्द्र का पुत्र था और उसे वरदान प्राप्त था कि शत्रु की आधी शक्ति देखते ही बालि के शरीर में आ जाती थी। रावण को भी पूजा में व्यवधान डालने पर उसने काँख में दबा लिया था और विवश कर दिया था। दुन्दुभि राक्षस को उसने मार डाला था अतः दुन्दुभि का भाई उससे लड़ने आया, जिससे युद्ध करते हुए वह उसके पीछे एक गुफा में घुस गया। सुग्रीव गुफा के मुख पर बैठा रहा। कई दिनों बाद गर्म व फेनयुक्त रक्त गुफा से बहकर बाहर आने लगा। सुग्रीव डर गया और समझा कि बालि को राक्षस ने मार डाला अतः गुफा का मुख बड़े पत्थर से बन्दकर नगर में आ गया। बालि जब लौटा तो क्रुद्ध होकर उसने सुग्रीव को निर्वासित कर दिया और सुग्रीव प्राण बचाकर ऋष्यमूक पर्वत पर रहने लगा जहाँ बालि ऋषि के शाप के डर से जाता नहीं था। यहीं सीता को खोजते हुए राम आए तो हनुमान द्वारा सुग्रीव से राम की मित्रता करायी गयी। सुग्रीव की सहायता करते हुए उन्होंने बालि को मार डाला।

सुग्रीव :

वानरराज बालि के भाई। अत्यन्त बुद्धिमान और बलवान वानर जो सूर्य के पुत्र थे। बालि से पीड़ित होकर ऋष्यमूक पर्वत पर रहते थे। जहाँ सीता को खोजते हुए राम लक्ष्मण से उनका परिचय हुआ और राम ने उन्हें मित्र बना लिया तथा बालि को मार डाला। सुग्रीव ने अपनी वानर व भालुओं की सेना सहित राम की लंका युद्ध में सहायता की।

ताड़का :

एक राक्षसी सुकेतु की पुत्री, सुन्द की पत्नी और मारीचि की माता। अगस्त्य की समाधि भंग करने के कारण वह राक्षसी बना दी गयी। जब उसने विश्वामित्र के यज्ञ में विघ्न डाला तो राम के द्वारा वह मार डाली गयी। राम पहले स्त्री पर शस्त्र उठाने के विरुद्ध थे किन्तु विश्वामित्र ने उनकी शंका को अपने तर्कों द्वारा दूर कर दिया।

तारक :

एक राक्षस, जिसे कार्तिकेय ने मार गिराया था। यह वज्रांग और वराङ्गी का पुत्र था। पारियात्र पर्वत पर तपस्या करके इसने ब्रह्मा को प्रसन्न किया और वर माँगा कि मुझे संसार में सात दिन के बच्चे को छोड़कर कोई न मार सके। इस वरदान के बाद शक्तिशाली वह देवताओं को भी सताने लगा। देवता

ब्रह्मा के पास गए उन्होंने कहा शिव से उत्पन्न पुत्र ही इसका वध कर सकता है। तत्पश्चात् शिव के पुत्र कार्तिकेय ने उसे मारा।

चन्द्रवंश :

देवगुरु बृहस्पति की पत्नी तारा को चन्द्रमा उठा ले गया और समझाने पर भी वापिस नहीं किया। घोर युद्ध हुआ। अन्त में ब्रह्मा जी ने सोम को इस बात के लिए विवश कर दिया कि तारा लौटा दी जाए। तारा को चन्द्रमा से एक पुत्र हुआ, जिसे बुध कहते हैं। यही बुध चन्द्रवंशी राजाओं का पूर्वज कहा जाता है।

इसी वंश मे आगे पुरुरवा, आयुष, नहुष, ययाति, पुरु जैसे विख्यात नृपति हुए।

जयद्रथ/सिन्धुराज):

सिन्धु प्रदेश के राजा, वृद्धक्षत्र का पुत्र, दुर्योधन का बहनोई, जिसकी बहन दुश्शला उससे ब्याही थी। जयद्रथ ने एक बार जब वह शिकार करने वन में गया था वनवास व्यतीत कर रहे पाण्डवों की पत्नी द्रौपदी को देखा और मोहित होकर उसे बलपूर्वक उठा ले गया किन्तु पाण्डव तब तक पहुँच गए। द्रौपदी को छुड़ाया और जयद्रथ को अपमानित कर छोड़ दिया। यह बहुत वीर योद्धा था। महाभारत में अभिमन्यु की मृत्यु के लिए अर्जुन ने इसे उत्तरदायी माना क्योंकि चक्रव्यूह के द्वार पर यह था और इसने भीम को अन्दर नहीं जाने दिया। अन्त में पुत्र के वध का बदला दूसरे दिन अर्जुन ने जयद्रथ का सिर बाण से उड़ाकर ले लिया।

धृष्टद्युम्न :

द्रुपद का पुत्र और द्रौपदी का भाई। ये पाण्डवों की ओर से महाभारत में लड़े। कई दिनों तक यह मुख्य सेनापति रहा। जब द्रोणाचार्य ने द्रुपद को मार डाला, तो इसने प्रतिज्ञा की कि मैं पिता की मृत्यु का बदला लूँगा। युद्ध के सोलहवें दिन, जब अपने पुत्र अश्वत्थामा की मृत्यु के झूठे समाचार को सत्य मान दुखी हुए द्रोणाचार्य शस्त्र त्यागकर रथ में ही समाधिस्थ हो गए तो धृष्टद्युम्न ने तलवार में सनका सिर काट डाला। इसको सुनकर अश्वत्थामा ने भी प्रतिज्ञा की कि पिता को अन्याय से मारने वाले धृष्टद्युम्न को वह छोड़ेगा नहीं और अन्त में जब सारा पाण्डव शिविर रात में सो रहा था, अश्वत्थामा ने अचानक आकर धृष्टद्युम्न को मार डाला।

चित्ररथ :

गन्धर्वों के एक राजा का नाम। गन्धर्व देवयोनि विशेष है। इनकी उत्पत्ति के बारे में कथा है कि कश्यप ऋषि के उनकी पत्नी मुनि से 16 पुत्र हुए, इनमें चित्ररथ सबसे अधिक गुणवान था। पाण्डव जब वनवासी जीवन व्यतीत कर रहे थे और द्वैतवन में रह रहे थे, तब दुर्योधन ने उन्हें चिढ़ाने के उद्देश्य से समीप ही वन में जलक्रीड़ा आदि का आयोजन किया और आमोद-प्रमोद किया, कर्ण भी उसके साथ था। सरोवर के किनारे शिविर लगाने की बात पर गन्धर्वराज से कौरवों का विवाद हो गया। क्रुद्ध हुए गन्धर्वों ने चित्ररथ के नेतृत्व में दुर्योधन को दण्डित करने हेतु आक्रमण किया। दुर्योधन और कर्ण सम्भल न पाए और दुर्योधन युद्ध के बाद बन्दी बना लिया गया। कर्ण को भागना पड़ा। जब पाण्डवों को यह समाचार मिला तो युधिष्धिर ने भाइयों का मन न होते हुए भी अर्जुन व भीम को सहायतार्थ भेजा और तब उ होंने आकर दुर्योधन को चित्ररथ के बन्धन से मुक्त कराया।

जरासन्ध/मगधेश

मगधनरेश बृहद्रथ ने काशिराज की दो जुड़वाँ कन्याओं से विवाह किया पर उसके कोई पुत्र न हुआ। अन्ततःनिराश हो वह वन में पत्नियों के साथ तपस्या करने चला गया। वहाँ ऋषि चण्डकौशिक की कृपा उसे प्राप्त हुई। उन्होंने आम का फल उसे दिया और कहा इससे तुम्हें पुत्र प्राप्त होगा। उसने उसे आधा-आधा काट कर अपनी दोनों पत्नियों को दे दिया। वे गर्भवती हुई। एक ही समय प्रसव हुआ किन्तु आधे-आधे हिस्से में शिशु उत्पन्न हुए, जिन्हें रानियों ने दासी से फिकवा दिया। जरा नाम की राक्षसी जब माँस ढूंढ़ती हुई उस समय वहाँ आयी तो वे टुकड़े उसके उठाते ही जुड़ गए और एक बालक बन गया। जरा ने उसे मारा नहीं और रूप बदल कर राजा के पास जाकर बच्चा उन्हें सौंप दिया।

यह बड़ा पराक्रमी जरासंध राजा हुआ। जिसका सभी लोहा मानते थे। कंस इसका दामाद था। जब युधिष्ठिर सम्राट बनने के लिए राजसूय करना चाहते थे, तो कृष्ण ने उन्हें बताया कि जरासंध के रहते वे सम्राट नहीं हो सकते। वह किसी का प्रभुत्व स्वीकार नहीं करेगा। इसके अतिरिक्त उसने राजाओं को बन्दी बना रखा है और उनकी यज्ञ में बलि दे सकता हैं अतः उसे मारना आवश्यक है किन्तु है वह बहुत बली। कंस वध से क्रुद्ध हो उसने मथुरा पर 18 बार आक्रमण किया और हमें राजधानी द्वारका ले जानी पड़ी!

यह जरासंध श्रीकृष्ण के इशारे पर द्वन्द्व युद्ध के दौरान भीम द्वारा मारा

गया ।

श्री शिवाजी सावंत की कृति मृत्युंजय में वर्णन है कि भानुमती के स्वयंवर के अवसर पर कर्ण ने वहाँ उपस्थित राजाओं को हरा दिया। कवचधारी होने से उसके शरीर पर शस्त्र नहीं असर करते थे अतः जरासंध ने उससे मल्लयुद्ध किया किन्तु कर्ण ने उसे हरा दिया ।

विरोचन :

राक्षसराज प्रहलाद के पुत्र । एक शक्तिशाली किन्तु न्यायप्रिय राजा। राक्षसराज बलि जो बड़े दानशील थे, इन्हीं के पुत्र थे ।

बलि :

विरोचन पुत्र बलि बड़ा शक्तिशाली राक्षस था। देवताओं को भी बहुत पीड़ित करने लगा, तब देवताओं ने विष्णु की सहायता माँगी । वे कश्यप और अदिति के यहाँ वामन रूप में अवतरित हुए और जाकर बलि से भूमि माँगी। बलि स्वभाव से ही बड़े दानी थे उन्होंने तीन पग जमीन देने की माँग तुरन्त स्वीकार कर ली । तब भगवान ने विराट रूप धारण कर लिया और एक पग से पृथ्वी, दूसरे से अन्तरिक्ष नाप लिया, तीसरे पग को रखने का स्थान नहीं था, तो बलि ने अपने शिर पर उसे ले लिया। भगवान ने बलि को सेना सहित पाताल लोक भेज दिया और वहाँ का अधिपति बना दिया। यह विष्णु का पाँचवाँ वामन रूप में अवतार था ।

भूरिश्रवा :

श्री कृष्ण की माता देवकी के स्वयंवर के अवसर पर शिनि तथा सोमदत्त का भयानक युद्ध हुआ । वसुदेव की ओर से शिनि लड़ा और सोमदत्त को पराजित कर दिया । तभी से दोनों वंशों में लड़ाई चली आ रही थी। सात्यकि शिनि का पौत्र था और यादव सेना का महारथी था । वह पाण्डवों की ओर से लड़ा । भूरिश्रवा सोमदत्त का पुत्र था और वह कौरवों की ओर से लड़ा ।

सात्यकि और भूरिश्रवा का भयानक युद्ध चल रहा था । सात्यकि हार गया और बेहोश असहाय था तब श्रीकृष्ण ने अर्जुन से जो कि जयद्रथ से लड़ रहा था कहा कि सात्यकि की सहायता करो, उसने यह कहकर मनाकर दिया कि भूरिश्रवा मुझसे नहीं लड़ रहा है । मैं उस पर बाण कैसे चलाऊँ किन्तु जब उसने देखा कि मृतप्राय असहाय सात्यकि पर भूरिश्रवा तलवार से वार करना ही चाहता है तो उसने दूर से उसकी भुजा बाण द्वारा काट डाली । भूरिश्रवा ने कृष्ण और अर्जुन दोनों की निन्दा की ओर क्षुब्ध होकर आसन लगाकर ध्यान-

मग्न हो गया । इसी बीच में सात्यकि ने सचेत होकर ध्यानस्थ भूरिश्रवा का सिर काट डाला ।

घटोत्कच :

पाण्डव जब वनवासी जीवन व्यतीत कर रहे थे तो वन में भीम को हिडिम्ब राक्षस मिला, जो नरभक्षी था, उसे उन्होंने मार डाला । तब हिडिम्बा जो उसकी बहिन थी ने भीम से विवाह प्रस्ताव किया जो उसने स्वीकार कर लिया । इसी से भीम को घटोत्कच पुत्र उत्पन्न हुआ । यह बड़ा शूरवीर तथा मायायुद्ध में निपुण था ।

श्रीकृष्ण ने इसको रात्रियुद्ध में कौशल दिखाने के लिए महाभारत युद्ध के चौदहवें दिन लगाया । इसके महा पराक्रम से त्रस्त होकर कौरव दल छिन्न-भिन्न हो गया, तब दुर्योधन के आग्रह पर कर्ण को इन्द्र द्वारा कवच कुण्डल दान से प्रसन्न होकर दी गई वैजयन्ती शक्ति का प्रयोग इस राक्षस पर करना पड़ा और वह मारा गया । यही श्रीकृष्ण का उद्देश्य था कि एक बार ही प्रयोग योग्य यह शक्ति निकल जाए और अर्जुन की प्राण रक्षा हो जाए ।

रन्तिदेव :

एक प्रसिद्ध राजा, जो चन्द्रवंश में भरत के बाद छठी पीढ़ी में उत्पन्न हुए थे । ये अत्यन्त पुण्यात्मा और उदार थे । इन्होंने बड़े-बड़े यज्ञ किए । यज्ञ में बलि दिए गए पशुओं की संख्या इतनी बड़ी थी कि रुधिर की नदी बह उठी, जिसमें उनकी खालें तैरती थीं । इसी नदी का नाम बाद में चर्मण्वती पड़ गया जो आज चम्बल कहलाती है ।

□□

काव्य में वैज्ञानिक नियमों तथा तथ्यों का संकेत

1. स्वयं विखण्डित होकर सविता का प्रताप धरता है :

यूरेनियम 235 के नाभिक के विखण्डन से अणुबम चलता है और एक छोटा सा सूर्य जन्म लेता है । अपार ताप, विकिरण तथा चमक उत्पन्न होती है । नाभिक का विखण्डन चारों ओर से उस पर उच्च विस्फोटकों के एक साथ प्रयोग से असीमित दवाब डालकर कराया जाता है ।

अणु के नाभिक के विखण्डन की प्रक्रिया चल पड़ती है । पदार्थ का शक्ति में रूपान्तरण होता हैं और नाभिकीय ऊर्जा प्राप्त होती है ।

2. ऊर्जा सा तू है अविनाशी :

वैज्ञानिक मानते हैं कि ऊर्जा कभी नष्ट नहीं होती, केवल अपने रूप बदलती है ।

3. नहीं अपेक्षा कुछ माध्यम की तू है लहर विभा की :

प्रकाश की किरणें बिना माध्यम के भी गतिशील होती हैं । उन्हें गुजरने के लिए माध्यम नहीं चाहिए । वे शून्य में भी गति करती हैं और गति सर्वाधिक होती है । 1 सेकेण्ड में 3 लाख कि०मी० । (299792.5 कि०मी०) ।

इसके विपरीत ध्वनि तरंगे बिना माध्यम के गतिशील नहीं हो सकतीं । अत: शून्य में ध्वनि का अस्तित्व नहीं । ध्वनि तरंग की गति भी केवव 330 मीटर प्रति सेकण्ड होती है । माध्यम के अनुसार ध्वनि की गति बढ़ती-घटती है । वायु की अपेक्षा पानी में ध्वनि की गति 5 गुनी हो जाती है और ठोस में पानी से भी 3 गुनी अधिक ।

4. द्रव होकर भी धातु गण्य है जैसे निर्मल पारा :

यही एक ऐसी धातु है जो द्रव है और बहुत भारी होता है । निर्मल एवं चमकदार होता है ।

5. धरती रवि की जायी :

खगोलीय सिद्धान्त है कि सूर्य आकाशगंगा में उत्पन्न हुआ एक तारा है और सौर मण्डल के बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, वृहस्पति, शनि, अरुण, वरुण व यम उसके नौ ग्रह सूर्य से निकले हैं।

6. देकर जन्म पुनः विधु को वह :

भूगोलवेत्ता मानते हैं कि उपग्रहों की उत्पत्ति ग्रहों से हुई। चन्द्रमा उपग्रह है, वह पृथ्वी से उत्पन्न हुआ।

7. जल से जलज जन्तु आए हैं :

वैज्ञानिक मानते हैं कि पृथ्वी पर जीवन का आरम्भ पहले जल से हुआ।

8. चक्रवात्

चक्रवात में केन्द्र में वायुदाब बहुत कम होता है, जिसे भरने के लिए चारों तरफ से हवाएँ तेजी से केन्द्र की ओर जाती हैं और पृथ्वी की परिभ्रमण गति से प्रभावित हो ये उत्तरी गोलार्द्ध में घड़ी की सुई की विपरीतदिशा में गतिमान होती हैं। विभिन्न क्षेत्रों की हवाओं के एकत्रण से बादल बनते हैं और झंझावात उत्पन्न होकर वर्षा होती है।

9. प्रतिचक्रवात

इसमें केन्द्र में वायु दाव अधिक होता है अतः हवाएँ केन्द्र से दूर दिशा में जाती हैं। ये उत्तरी गोलार्द में घड़ी की सुई की दिशा में गोलाकार बहती हैं। आकाश निर्मल होता है। बादल नहीं होते और दृश्यता बढ़ती है। प्रतिचक्रवात का आकार चक्रवातों से बहुत बड़ा होता है। ये हजारों किलोमीटर में फैले होते हैं।

10. कितनी बार बना है भूतल कितनी बार मिटा है :

यह धरातल स्थिर नहीं है। इसमें उत्थान-पतन, संयोजन-विखण्डन होता रहता है किन्तु भूगर्भिक क्रियाएँ करोड़ों वर्षों में सम्पन्न होती हैं। जहाँ आज हिमालय है, वहाँ कभी टेथीज नामक सागर था। आज अरावली एक नीचा पर्वत है कभी वह हिमालय सा ऊँचा था। सागर तल भी ऊँचा नीचा होता रहता है। नए द्वीप उत्पन्न होते हैं। सागर कभी धरातल को डुबा देता है तो कभी पीछे हटता है। ये भू-गर्भ शास्त्रीय तथ्य हैं। जल प्रलय प्रत्येक धर्म के

पुराणों में वर्णित है । हिमयुगों में सागर तल घटता है ।

11. उच्चदाब पर धारण करते द्रव का भाव परुष भी :

यह वैज्ञानिक सिद्धान्त है कि अत्यधिक उच्चदाब पर ठोस भी द्रव के समान व्यवहार करने लगते हैं जैसे-पृथ्वी के गर्भ में चट्टानें भी प्लास्टिक की प्रकृति रखती हैं ।

12. यम ग्रह :

यद्यपि यम ग्रह भूमि से सर्वग्रहों से दूर खगौलिक तथ्य हैं । सूर्य से उत्पन्न नौ ग्रह दूरी के अनुसार इस प्रकार व्यवस्थित हैं—

सूर्य—	बुध,	शुक्र,	पृथ्वी,	मंगल,	वृहस्पति,	शनि,	अरुण,	वरुण,	यम
दूरी करोड़ कि०मी०	5.8	10.8	14.96	22.7	77.7	142.7	287	450	590

13. शुक्र :

हीन शुक्र से भासते तारक मुझे समस्त ।

यद्यपि तारे के रूप में भूमि से दिखायी देता है वस्तुतः एक ग्रह है जो सूर्य से 10.8 करोड़ कि०मी० दूर है। आकार लगभग पृथ्वी के बराबर है। इसका व्यास 12104 कि०मी० है और सूर्य की परिक्रमा 225 दिनों में करता है। इसका परिक्रमा पथ इस प्रकार है कि यह आकाश में सूर्योदय से पूर्व और सूर्यास्त के बाद थोड़े समय के लिए चमकता हुआ भूमि से दिखायी देता है। किन्तु यह अपने आस-पास आकाश में दिखने वाले सभी प्रकाश स्रोतों से अधिक दीप्तिमय दिखता है ।

14. भौम-मंगल :

मंगल ग्रह पुराणों के अनुसार यह भूमि का पुत्र है। किन्तु खगौलिकी के अनुसार यह भी सूर्य से उत्पन्न पृथ्वी के समान ग्रह है जो सूर्य से 22.7 करोड़ कि०मी० और पृथ्वी से 8 करोड़ कि०मी० की दूरी पर है। इसका व्यास 6787 कि०मी० है। और 687 दिनों में सूर्य की परिक्रमा करता है । यह आकाश में लाल रंग का चमकता हुआ दिखता है।

15. सीमित शक्ति इन्द्रियाँ दी हैं :

मनुष्य की आँखें प्रकाश की केवल उन तरंगों को ग्रहण करने में समर्थ हैं, जिनका तरंग दैर्घ्य 400 नेनोमीटर से 700 नेनो मीटर तक होता है। जबकि

सृष्टि में प्रकाश तरंगे असंख्य तरह की हैं। इससे कम वेवलेंग्थ की तरंगे अल्ट्रा वायलेट तथा अधिक वेवलेंग्थ की तरंगे इन्फ्रा रेड कहलाती हैं। ये मानव को अदृश्य हैं।

इसी प्रकार ध्वनि की वे तरंगे ही मानव को श्रव्य हैं, जिनकी आवृति 20,000 हर्ट्ज तक है। इससे ऊपर फ्रीक्वेंसी की ध्वनि हम नहीं सुन सकते। ये अल्ट्रा सोनिक कहलाती हैं।

16. ध्वनि प्रकाश के महा उदधि से :

यह सारा ब्रह्माण्ड तथा पार्थिव जगत वस्तुतः प्रकाश तरंगों तथा ध्वनि तरंगों का ही महा सागर है। इसी से दृश्य प्रपंच विस्तृत है। पदार्थ और ऊर्जा अन्तर्परिवर्तनीय है। पदार्थ ऊर्जा का ही एक रूप है।